Introduction

भूमिका

नवगीत हिन्दी की अधुनातम रागात्मक छान्दस विधा है, राम-सामयिकी कविता के मुख्य दो स्वरुप प्रतिष्ठापित हुए हैं, जिनमें नई कविता तथा नवगीत की सोच का धरातल समानान्तर ही चला है। कुछ लोग कहते हैं कि नवगीतकार नई कविता का अनुगमन कर रहे हैं, या नई कविता के समान सोच पर ही यह नवगीत की अट्टालिका खड़ी हुई है, किंतु तथ्य इससे सर्वथा इतर है, नवगीत की अपनी मौलिक पहचान है। अपनी स्वयं की अस्मिता है। वैचारिक धरातल पर तथा प्रस्तुति की विशिष्टता पर यह एक नया ही रागात्मक आन्दोलन है, जिसने हिन्दी कविता को जनाग्रही रुझान प्रदान किया है।

नई किवता ने हिन्दी को एक अभिजात वर्गीय पाठक दिया, अनेक समर्थ समीक्षकों एवं आलोचकों ने नई कविता को शिखरस्थ पहचान के साथ जोड़ा और हिन्दी की रागात्मक छान्दस कविता को हासिये पर टांक दिया। किंतु समय के बदलते माहौल ने गीत के राग की मधुर झंकृति का आकर्षण फिर एकत्र कर लिया, हिन्दी कविता जो आम आदमी के घेरे से दूर हो कर कुलीन परिवार में वाहवाही पा रही थी, उसने हिन्दी का सामान्य पाठक खो दिया। बाथ तो खेतहर किसान और मजदूर वर्ग के संत्रास की होती है। किन्तु भाषिक अभिव्यंजना अभिजातीय सोच से सम्पृक्त होकर सामान्य आदमी की समय से मीलों दूर हो जाती है। नवगीत की प्रतिष्ठा का मूलाधार यह भी एक कारण है।

हिन्दी में नवगीत का भगीरथ प्रयत्न निराला से माना गया। बाद में छन्द, कथ्य, प्रस्तुति और सोच के दायरे विस्तृत किए गए। गीत का वर्ण्य भी सहज और सरस हुआ। आम आदमी की भागीदारी इसमें तय की गई। पिछड़ी और संत्रासित जिन्दगी का बयान दर्ज किया गया। नवगीत सामान्य आदमी की उंगली पकड़कर उसके साथ साथ चहल-

कदमी करता नज़र आया और आम आदमी को लगने भी लगा कि यह नवगीत ही हमारा अपना राग है। हमारी-अपनी पहचान है, हमारा अपना कथन है।

नवगीत का प्राप्य इतिहास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकसित हुआ। नवगीत दशक से अर्द्धशतक तक की यात्रा की यात्रा में इसकी अस्मिता को जमाया गया। अनेक समर्थ हस्ताक्षरों ने इसे पुष्ट किया। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में ही नईम, धर्मवीर भारती, वीरेन्द्र मिश्र, मुकुट बिहारी सरोज, शम्भूनाथ सिंह, अमरनाथ श्रीवास्तव, रामदरथ मिश्र जैसे समर्थ नवगीतकारों ने बिगुल बजाया और एक बड़ी नवगीतकारों की सेना पूर्ण रुप से समृद्ध होकर सामने आ गई।

आज के नवगीतकारों में देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' शिखरस्थ पहचान के साथ प्रतिष्ठित हैं। नवगीतों की सही पहचान स्थापित करने में तथा नई परिपक्व सोच को रागात्मक स्पर्श देने में देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' का प्रदान रेखांकित किया जाया है।

मैंने एम.ए. करने के बाद जब गीत विधा का विस्तृत आयाम देखा तथा नवगीत के नये तेवर समझने का यत्न किया। तब लगा कि देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' इस युग के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। मैने सम्मोहन की अवस्था में आकर इस कवि को समग्रतः पढ़ा और समझने का यत्न भी किया, और तभी मन में य संकल्प भी कर लिया कि उचित अवसर मिलने पर नवगीत के संदर्भ में देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' के प्रदान को ही शोध का विषय बनाकर पी.एच.डी. उपाधि के लिए शोध कार्य करुँगी।

संयोग से मेरे पति श्री डॉ. सुनील प्रसाद का स्थानान्तर होमियोपैथ-विद्यालय में बड़ौदा में ही हो गया तो मैंने यहाँ विश्वविद्यालय परिसर में आना जाना प्रारंभ किया और संयग से मेरा साक्षात्कार नवगीत के प्रसिद्ध हस्ताक्षर तथा समीक्षक डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी से हो गया। मैंने नवगीत के संदर्भ में अपनी जिज्ञासा प्रगट की तो उन्होंने तुरंत अपनी सहमति प्रदान कर दी और पी.एच.डी. के लिए मेरे विषय का महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिन्दी विभाग में पंजीयन हो गया।

मैंने देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' के समग्र साहित्य का अध्ययन किया। उनसे साक्षात्कार भी किया और डॉ. विष्णु विराट के निर्देशन में प्रबंध लेखन की तैयारी में जुट गई। अत्यन्त परिश्रम तथा व्यापक अध्ययन के बाद यह शोध-प्रबंध 'देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' और उनका साहित्य सृजन' तैयार कर सकी हूँ।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध-प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

इस तरह प्रस्तुत शोध-प्रबंध में देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' व्यक्तित्व एवं कृतित्व की समुचित समीक्षा की गई है।

इस अध्ययन यात्रा में मैंने देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' से उनके ही गाजियाबाद के आङ्गास पर साक्षात्कार किया। उनके द्वारा ही अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध की। मेरे शोध निर्देशक डॉ. विष्णु विराट के द्वारा अनेक नवगीतकारों से मेरा परिचय हो सका, अनेक महत्वपूर्ण काव्यसंग्रह प्राप्त हो सके और सतत निर्देशन के द्वारा आप मेरा मार्ग प्रशस्त करते रहे। मैं हृदय से आपकी आभारी हूँ।

इस शोध कार्य के दरम्यान मेरे पति डॉ. सुनील प्रसाद की भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य के दौरान हरपल मेरा उत्साह वर्द्धन किया है, मुझे प्रोत्साहित किया है। हिन्दी विभाग, म.स.वि., बड़ौदा के सभी अध्यापक मित्रों का भी मैं आभार मानती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साह वर्द्धन किया था।

सबसे अंत में मैं अपने पिताश्री श्री मधुसूदन प्रसाद जो पोस्टल विभाग में ए.पी.एम. एकाउन्टेन्ट (लेखापाल) रह चुके हैं जो अभी अवकाश प्राप्त हो सुखमय जीवन यापन कर रहे हैं उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, कि आज वे मुझे शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर नहीं करते तो मैं कदाचित् इस मंजिल तक नहीं पहुँच पाती। और प्रातः पूज्यनीय मेरी माताश्री श्रीमति शांति देवी गुप्ता, जो शिक्षिका रह चुकी हैं। जिन्होंने हर पल मुझे प्रोत्साहित किया, सही मार्गदर्शन दिया। एम.ए. करने में माँ का योगदान अधिक रहा है। माँ के ऋण से कोई मुक्त नहीं हो सका है। पर कृतज्ञता तो व्यक्त कर ही सकती हूँ।

साथ ही मैं अपने पूज्य ससुरजी श्री कन्हैयालाल प्रशाद तथा सासुजी श्रीमती कांतिदेवी के अपार स्नेहाशीष के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इस मुकाम तक पहुँचाने में मेरे पति डॉ. सुनील प्रसाद का प्रतिदिन का परिश्रम और योगदान रहा है। उनके बिना असंभव था।

विनीत

अंजनी गुप्ता

अंजनी गुप्ता